Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

कहानी सग्रह 'खयालनामा' में नारी की सामाजिक स्थिति: एक दृष्टि

Mahipal*

M.Phil. in Hindi

सार – ***मनुष्य समाज और समाज मनुष्य के बिना अधुरा है। साहित्यगत अनुभूतियाँ व्यक्ति एवं समाज के यथार्थ को चित्रित करने के साथ-साथ व्यक्ति एंव समाज का पथप्रदर्शन भी करता है, इसलिए समाज व्यक्ति और साहित्य एक दूसरे से परे नहीं किया जा सकता। साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, समाज का दीपक भी है। डॉ. रामविलास शर्मा मनुष्य एवं समाज के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है कि- "मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास उसके सामाजिक जीवन से ही संभव है। इसलिए व्यक्ति एंव समाज की स्वाधीनता एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे पर अश्रित है।"***

----------X----------

व्यक्ति एंव सामाजिक व्यवहारशीलता से जो अनुभव हम प्राप्त करते हैं, उसी अनुभूतियों के आधार पर हम समाज को समझ सकते हैं। वंदनाराग जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से हमें समाज के हर पहलु के दर्शन कराए हैं। उन्होने समाजिक अच्छाई और बुराई दोनों से हमे परिचित करवाया है। वंदना जी ने हमारे समाज व्याप्त विघटित मानवीय मूल्यों, समाज में जागरूकता का अभाव, नारी शोषण, नारी के प्रति पुरूष की सोच तथा मानवीय स्वभाव का यथार्थ चित्रण किया है, क्योंकि वंदना जी ने अपने समय तथा आजादी के समय की कहानियों का समन्वय किया है। वंदना जी ने साथ ही समाज में बदलाव का चित्रण किया है। नारी की स्थिति पर वंदना जी की लेखनी न चले फिर तो वही बात हो की सुरज का पश्चिम से निकलना। वंदना जी समाज के हर पहलु को बड़ी कुशलता के साथ पाठक के सामने रखा जिसमें उन्होने नारी की स्थिति का भी बडे मार्मिक एंव तर्क पूर्ण ढंग से वर्णन किया है। वंदना जी ने अपनी कहानियों में नारी की स्थिति को कुछ इस प्रकार दर्शायी है "यह लगभग पक्का हो चुका था कि चुन्नू यादव मल्लिका की माँ को अपनी जरखरीद समान मानता था। उसकी आज्ञा के बिना वे घर में एक, पत्ता तक नहीं हिसा सकती थी।" इस पर 'आज रंग' में वंदना जी नारी के शोषण को चित्रित करने का प्रयास करते हुए यह बताना चाहती है कि आज भी चुन्नू यादव जैसे नेता गरीब औरतों को नौकरी तो दिलवा देते है लेकिन उस पर पूर्ण रूप से अपना अधिकार समझ लेते हैं। औरत को उसी के कहे अनुसार चलना पड़ता है। साथ ही वंदना जी ने पुरूष की अश्लीलता का चित्रण किया है "चुन्नू यादव ने देखा की मल्लिका आ रही है तो वह दूर से लम्पर हुई से मुस्कुराया चून्नू यादव ने अश्लीलता से अपना हाथ आगे बढ़ाया और फूल की तरह हल्की देह वाली मल्लिका को गोद में उठाकर गाडी की पिछली सीट पर बिठा दिया" यहाँ पर वंदना जी ने पुरूष की अश्लीलता तथा नारी की स्वतंत्रता पर रोक का चित्रण किया है। साथ ही वंदना जी ने बताया वर्तमान समाज में नारी का हर जगह शोषण होता है। वंदना जी ने 'आँखे' कहानी के माध्यम से भी नारी शोषण का चित्रण किया है। बंदना जी ने ने नेहा ठाकुर पर हुए शोषण का चित्रण किया- "रीना के कहे अनुसार हमने उसकी कलाई देखी फिर उसी बांह गर्दन देखी हर जगह खरोचों के निशान थे। ऐसे निशन किसी से छीना झपटी करते वक्त उभर आते है। मोरे-मेरे: खुरदरे उभरे लाल व नीले निशान। जो पुराने वे जाने पर काले पड जाते हैं। शक की असीम परछाईया हमारे अन्दर हादसे की शक्ल में बैठने लगी, जैसे आकाश में अँधेरा छा गया हो" वर्तमान समय में भी इस तरह की समस्या बनी हुई है। हर दिन टी.वी. अखबारों में पढने को मिलता है कि पाँच वर्ष की लडकी के साथ दुष्कर्म किया गया वंदना जी चाहती है कि इसके लिए हमारी सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए ताकि भविष्य में भी कोई इस तरह का अमानवीय कर्म न करे। पुरूष की सोच क्या होती चली जा रही है। स्त्री को के कर इसका परिचय बंदना जी ने अपनी कहानी 'सिनेमा' के बहाने में इस प्रकार दिया "बिल्डर फिल्म मैं पैसा लगाने को तैयार हो जाता है लेकिन हीरोइन के तौर पर शिल्पा शेट्टी व दिया मिर्जा को लेने को बात कहता है। इतना कह कर उसने अपनी

www.ignited.in

आँख दबाई हरे सकता है हमें भी मजा लेने का मौका मिल जाए।'' वह औरत को गंदी नजर से देखता उसके लिए स्त्री केवल भोग्या वस्तु है इस प्रकार स्त्री की दशा के साथ-साथ वंदना जी ने भ्रष्ट पूरूष को बेनकाब कर दिया है। वंदना जी ने बताया विवाह के नाम भी स्त्री का शोषण होने लगा कहानी क्या 'देखे दर्पण में' "मैं झूठ बोल रहा था और झूठ के पाँव बडे डगमग थे। कैसे बताता लोग को गरीब दूर की दुल्हन किस योजना के तहत लाये थे। विनोद की बीमारी हमें इस पूरे शहर से छुपानी थी। सच पता चलने पर दूर की लडकी तौबा कम मचाती हैः इसी कारण हम गरीब लडकी को ब्याह कर लांए थे।" अर्थात पुरूष अपनी झूठी शान को बनाए रखने के लिए अपनी कमी स्त्री पर थोप देता है। आज के समाज में भी यही हो रहा है। इस प्रकार वंदना जी ने दिखया है की जगह जगह पर नारी का शोषण हो रहा है। वंदना जी ने 'दो ढ़ाई किस्से' कहानी के माध्यम से एक भारतीय नारी को चित्रित करने का सार्थक प्रयास किया है। भारतीय नारी को माँ के रूप में वंदना जी ने बताया की माता का हृदय अपने बच्चों के प्रति आधार स्नेह से भरा होता है यथा "बस हर घर की तरह मेरे घर में भी एक अम्मा ही थी जो पूरे घर से छुपा-छुपाकर मेरे लिए कुछ खाने-पीने का जुगाड कर देती थी। चुपके से रसोई घर के सबसे नीचे ताखे पर तसले से ढ़क कर खाना रख देती थी। मैं बिल्लियों की तरह घट में घस कर खाना खा जाता था।'' बंदना जी ने बताया कि एक माँ की नजर मैं उसके सभी बच्चें समान होते हैं चाहें वे बेरोजगार ही क्यों न घूमते हो। एक माँ स्वयं भूखी सो सकती है लेकिन अपने बच्चों को भूखा नहीं सुला सकती। इस प्रकार वंदना जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से ममतामयी हृदय का चित्रण किया है।

वंदना जी ने जहाँ एक तरफ नारी शोषण का चित्रण किया है वहीं दूसरी तरफ नारी शक्ति का भी वर्णन किया है। वंदना जी ने बताया कि समाज में नारी को कदम-कदम पर निचा दिखाया जाता है लेकिन फिर भी नारी दुगने जोश के साथ खड़ी हो जाती है। गाँधी जी के समय भी कुछ नारियों ने चारदीवारी और देश के लिए अपने प्राणों तक को न्योछावर कर दिया। इस प्रकार वंदना जी ने निम्न उदाहारणों के माध्यम से नारी शक्ति का परिचय दिया है- "समीर मल्लिका को तेज आवाज में बोलना है, लेकिन आवाज सुनते ही उस पर नकारात्मक असर हुआ और बिना डरे कडवी छीलने वाली आवाज में बोली, क्या मतलब है तुम्हारा और इस तरह क्यों सामने आकर खड़े हो गए हो'' इस प्रकार वंदना जी ने दिखया समीर जिस मल्लिका को फूल की तरह नाजुक समझता था उसे सामना होने के बाद पता चलता है कि नारी में कितनी ताकत होती है। इस प्रकार लडकियों के माध्यम से वंदना जी ने नारी शक्ति का परिचय दिया है वो कहती है कि माना कुछ नारियों का आज भी समाज में शोषण हो रहा है लेकिन समाज में अब भी अनेक नारियाँ ऐसी है जो पुरूषों का तथा बुराईयों का डट कर सामना करती है।

निष्कर्ष:-

अतः हम देख सकते हैं वंदना जी ने अपनी कहानियाँ के माध्यम से स्त्री की स्थिति को निराशा से आशा की तरफ ले कर चलती है। कहानियों के माध्यम से वंदना जी समाज मैं स्त्री की यथार्थ स्थिति का भी वर्णन किया है। इसमें इन्होने स्त्री का शोषण, स्त्री की मजबुरी लाचारी, स्वतंत्रता हनन के साथ स्त्री के विशाल हृदय का भी वर्णन किया है। जहाँ एक तरफ इन्होंने स्त्री को मजबूर बेसहारा और इन्होने स्त्री को शक्ति पूंज के रूप में पाठकों के सामने रखा जो अपने अधिकार को बचाना जानती है तो उनके लिए डर कर पुरूष समाज से मुकाबला करना भी जानती है। अंत में केवल इतना ही वंदना जी सम्पूर्ण स्त्री व्याक्तिव की छलक अपनी कहानियों पाठक को करा।

संदर्भ सूचीः-

1. डॉ. रामविलास शर्माः साहित्य स्थाई मूल्य और मूल्याकन पृ. 18
2. वंदना रागः कहानी संग्रह 'ख्यालनामा', आज रंग पृ. 33
3. वंदना रागः खयांलनामा, आँखे पृ. सं. 57
4. वंदना रंगा ख्यालनामा, क्या देखे दर्पण मैं, पृ. संख 117
5. वंदना रागः खयालनामा, दो ढाई किस्से पृ. 82
6. वंदना रागः खयालनामा, आज रंग है पृ. 35

Corresponding Author

Mahipal*

M.Phil. in Hindi

mahinirmal109@gmail.com

www.ignited.in